उत्पत्ति ४४.

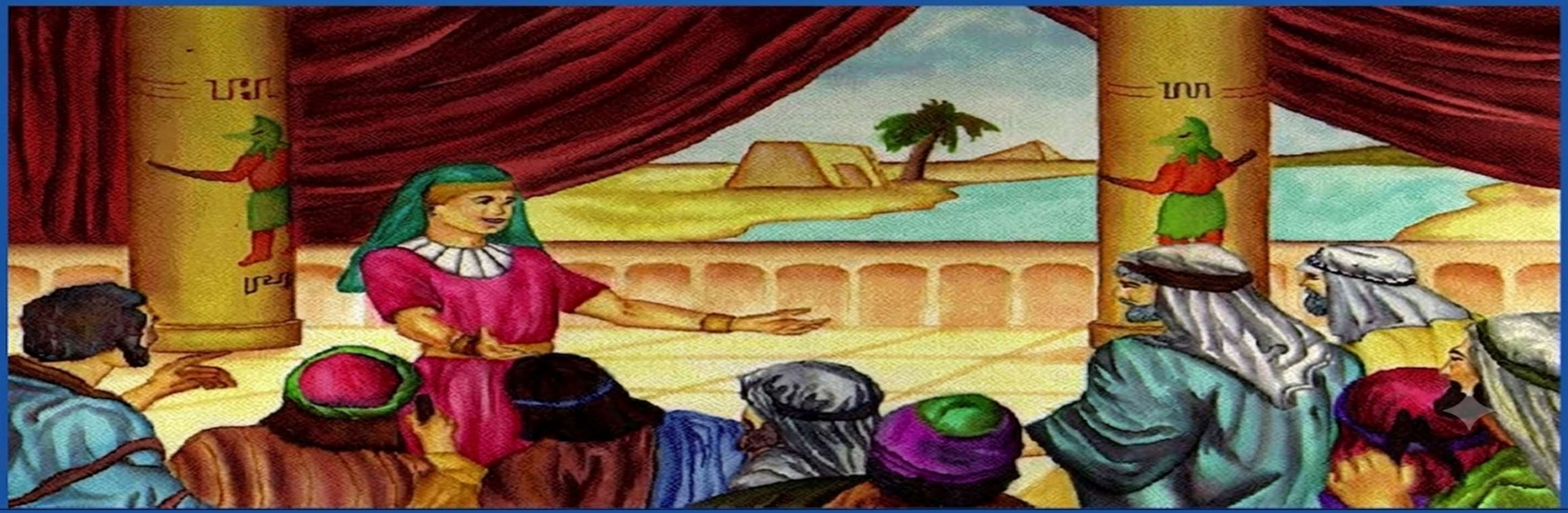

- **यूसुफ़ येशु** (यीशु) का **एक प्रतीक** है।
- **प्रतीक** का अर्थ है **"नमूना"** या **"पैटर्न"**, न कि कोई पूर्व-अवतार।
- **भाई** यूसुफ़ के साथ भोजन करते हैं, और **बिन्यामीन** को **पाँच गुना** अधिक मिलता है (राजसी भाग)।
- **फिर से**, **चाँदी के थैलों** को **अनाज के थैलों** में रख दिया जाता है।

यूसुफ़ का भविष्य-दर्शन का कटोरा

- **"कप"** वास्तव में एक **कटोरा** ही था।
- **द्रष्टा** लोग इस **कटोरे** का उपयोग **भविष्य-दर्शन** के लिए करते थे।
- यह **संभावना कम** है कि यूसुफ़ ने इस कटोरे का उपयोग **भविष्य-दर्शन** के लिए किया, परन्तु वह **बाहरी दिखावे** को बनाए रखता था।
- **यूसुफ़** सेमिटिक दिखता था, किन्तु **मिस्री** वेश-भूषा धारण करता था।
- यह **सामान्य ज्ञान** था कि **सेमाइट** लोग **मिस्र** पर शासन कर रहे थे।

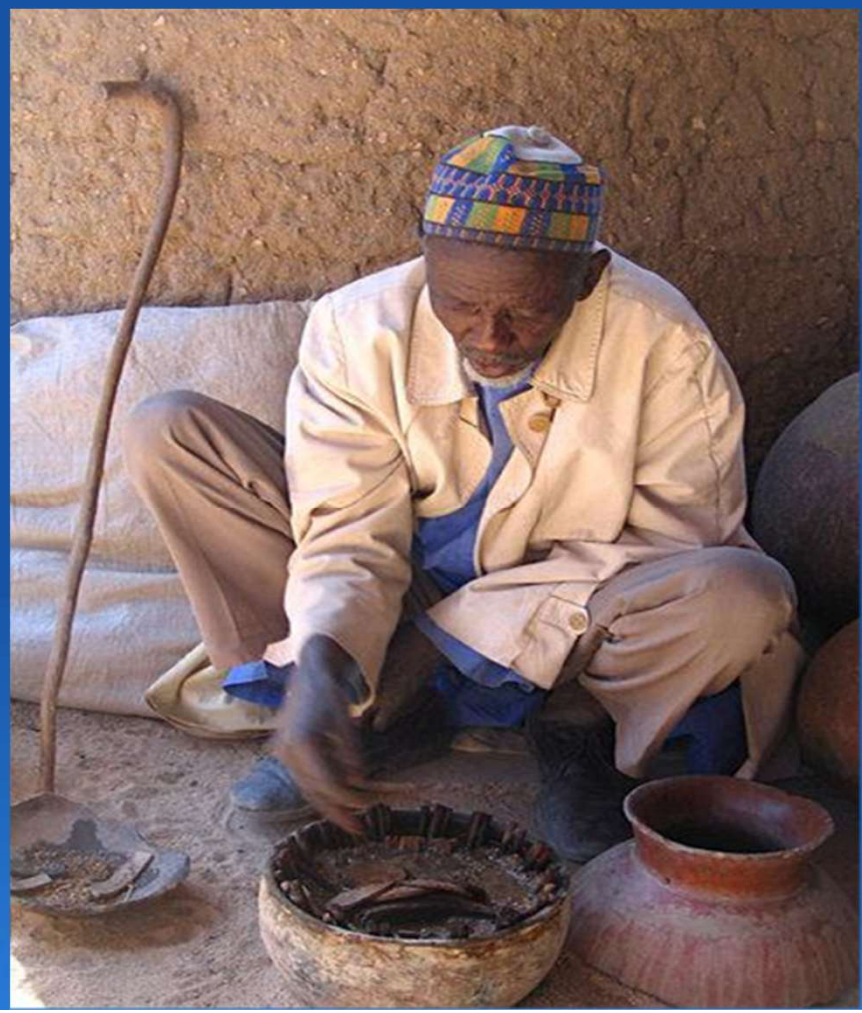

मृत्यु भाइयों का मार्ग है

- **जिसके थैले** में **यूसुफ़** का **भविष्यदर्शी कटोरा** हो, **वह मर जाए!**
- **कटोरा बिन्यामीन** के थैले में पाया गया।
- उन्होंने **शेकेम** के **सभी पुरुषों** को मार डाला – **दीनाह** के साथ बलात्कार के कारण।
- उन्होंने **यूसुफ़** को मारने का **प्रयास** किया।
- **यहूदा** ने **तामार** को मार डालने का **आदेश** दिया।

एक महत्वपूर्ण मोड़

- **भाई बिन्यामीन** के साथ रहने का **निश्चय** करते हैं।
- **यहूदा प्रवक्ता** की भूमिका निभाता है।
- **यहूदा** अपनी **स्वीकारोक्ति** करता है: वे **कटोरे** या **धन** चुराने के दोषी **नहीं** हैं।
- **किन्तु...** वे अपने **अनेक पापों** और **दुष्कर्मों** के दोषी हैं।

यूसुफ़: मसीहा का एक प्रतिरूप

- **उद्धार का सिद्धान्त #१:** **तुम** और **केवल तुम** अपने पापों के लिये उत्तरदायी हो। तुम **दूसरों** के पापों के लिये उत्तरदायी **नहीं** हो।
- **उद्धार का सिद्धान्त #२:** प्रभु के सामने **निर्दोषता** का दावा करना **व्यर्थ** है। परमेश्वर को **सभी गुप्त बातें** ज्ञात हैं। सभी **पाप** से भरे हुए हैं।
- **भविष्यदर्शन :** यह मनुष्य का प्रयास है कि वह देवताओं की शक्ति का उपयोग करके **गुप्त बातों** को जान ले।
- प्रायः यह **धोखा** ही होता है।
- कभी-कभी **शैतान** ही शक्ति प्रदान करता है।
- कभी-कभी **परमेश्वर** ही शक्ति प्रदान करता है ताकि लोग भविष्य की बातें देख सकें (जैसे **भविष्यद्वक्ता**गण)।

“...तुम जो फिरौन के समान हो...”

- **यूसुफ़** को **फिरौन** द्वारा **उच्च पद** पर नियुक्त किया गया।
- उसको **फिरौन** के **समान अधिकार** प्राप्त थे।
- **किन्तु यूसुफ़ फिरौन नहीं था!**
- यह **पिता और पुत्र** (यीशु) के सम्बन्ध का **उत्तम चित्र** है।
- **यीशु** पिता के **सम्पूर्ण अधिकार** और **सत्ता** का उपयोग करता है।
- **किन्तु यीशु पिता नहीं है**, वह **“वचन”** है।
- **एकता** और **समानता** है, तथापि **यीशु यहोवा** के अधीन है।

मसीहाई पूर्व-छाया

- **मत्ती ५:१७ – "यह मत समझो कि मैं व्यवस्था को मिटाने आया हूँ..."**
- **यहूदी** लोग **तनख** (पुराना नियम) का अध्ययन उसी प्रकार करते हैं जैसे **यीशु** ने किया था।
- **रब्बियों** ने **यूसुफ़** में **मसीहाई तत्व** को देखा था।
- **प्रभु की प्रार्थना पहाड़ी उपदेश** का भाग है (मत्ती ६)।
- हम **यीशु** को **नहीं**, बल्कि **पिता** को प्रार्थना करते हैं।
- **यीशु** ने **स्वयं** को प्रार्थना नहीं की।
- **यहूदा** की **यूसुफ़** के सामने **स्वीकारोक्ति** की "प्रार्थना" सम्भवतः **प्रभु की प्रार्थना** के बाद **दूसरा** सर्वोत्तम उदाहरण है – **"हमारे पिता"** को प्रार्थना करने का।

उत्पत्ति ४५: क्षमा

- **यहूदा** ने अपना **अपराध** स्वीकार किया और **दया** की विनती की।
- उसने **बिन्यामीन** के स्थान पर **अपना प्राण** देने का प्रस्ताव रखा।
- **यूसुफ़** स्वयं को रोक न सका और **आनन्द** तथा **दुख** के **आँसू** बहाने लगा।
- **यीशु** को **उस क्रूस** पर लटकते हुए **क्या अनुभव** हुआ होगा?
- **"एलोई, एलोई, लमा शबक्तनी?"** ('मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया?')

कार्य पूर्ण हुआ!

- **यूसुफ़** ने **इस्राएल** की **शारीरिक** जीवन रक्षा की।
- **यीशु** ने **इस्राएल** के **नित्य** (आत्मिक) जीवन की रक्षा की।
- **जो कोई भी इस्राएल** की वाचा में **विश्वास** द्वारा **यीशु** से जुड़ जाता है, वह **उद्धार** पा लेता है!
- **यूसुफ़** ने आदेश दिया कि उसके **कुल** को **मिस्र** लाया जाए ताकि उनकी **देखभाल** की जाए।
- **यीशु** ने अपने **शिष्यों** से कहा, "**मेरी भेड़ों को चरा।**"

इस्राएल के लिए तैयार किया गया स्थान

- **फिरौन** ने **इस्राएल** को देश की **सबसे उत्तम भूमि** रहने के लिए दे दी।
- **यूसुफ़** ने **फिरौन** को **गोशेन** प्रदेश का सुझाव दिया।
- **गोशेन** में **अत्यन्त उत्तम चरागाह** वाली भूमि थी, जो **भेड़-बकरियों** के चराने के लिए **पूर्णतः उपयुक्त** थी।
- यह **मिस्र** की मुख्य जनसंख्या से **दूर** था।
- **मिस्री** लोग **चरवाहों** को **निम्न श्रेणी** का समझते थे।
- **गोशेन** ने **इस्राएल** को **बढ़ने** और **समृद्ध** होने का **उत्तम स्थान** प्रदान किया।

अपनी यात्रा में विवाद मत करो

- **यूसुफ़** अपने **पिता** को भेंटें भेजता है और उन्हें **मिस्र** आने के लिए आमंत्रित करता है।
- **यूसुफ़** अपने **भाइयों** से कहता है, "**झगड़ा मत करो**।"
- **हम** से अपेक्षा की जाती है कि हम **परमेश्वर** के साथ की अपनी यात्रा में **झगड़ा** न करें।
- **एकता** का अर्थ "**लाखों शरीर और एक मन**" **नहीं** है।
- **एकता** का अर्थ है "**लाखों शरीर और एक हृदय**"।
- **एकता सामान्य सहमति नहीं** है।
- यह **मसीह** में **एकत्व** है।
- **याकूब** को ज्ञात होता है कि **यूसुफ़** जीवित और कुशल-मंगल है, और उसके हृदय में **शान्ति** भर जाती है।